लेखक को कार्यकर्ता होना चाहिए : राजेंद्र जोशी

रोहित कुमार

साहित्य चर्चा

केंद्रीय साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के तत्वावधान में सात दिवसीय राष्ट्रीय साहित्योत्सव में बुधवार को रवींद्र भवन में उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मेलन हुआ। इस सत्र में 'मेरी रचना मेरा संसार' के अंतर्गत राजस्थानी भाषा के लेखक राजेंद्र जोशी ने अपने रचना संसार से रूबरू कराया।

अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासन राव ने बताया कि इस सत्र में 'मेरी रचना, मेरा संसार' कार्यक्रम में पांच भारतीय भाषाओं के रचनाकारों की परिचर्चा में जोशी ने कहा कि वे अपने परिवेश से सीखते हैं और आसपास के चरित्रों का निर्माण करते हैं। जोशी ने बताया कि उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता से अपना सफर प्रारंभ करते हुए लिखना-पढ़ना शुरू किया और वे तीन दशकों से पूरी ईमानदारी और निष्ठा से एक लेखक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उन्होंने समाज और आम आदमी के प्रति लेखक के दायित्वों को रेखांकित करते हुए कहा कि लेखक को एक्टीविस्ट होना चाहिए। स्वयं को लोक में रहने वाला लेखक बताते हुए जोशी ने कहा कि उनकी दादी द्वारा कही जाने वाली लोक कथाओं को सुनते हुए उन्हें साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली। जोशी ने अपने रचना संसार में समाज की भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि राजस्थानी परिवार में सदैव लोक संस्कृति को तरजीह दिए जाने के कारण राजस्थानी लेखन विश्व की अन्य भाषाओं के लेखन के बराबर दिखाई देता है। जोशी ने कहा कि लोक के साथ घर, परिवार और समाज में रहते हुए वहां के विषयों, घटनाओं और पीड़ा को कविताओं में उठाने का वे प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि लोक संस्कृति को जीने वाला लेखक ही राजस्थानी में लिख सकता है।

इस सत्र में बोडो के लेखक अदाराम बसुमतारी, हिंदी के कृष्ण मोहन झा, अंग्रेजी की संगीता मल्ल ने भी अपने रचना संसार से परिचय कराया। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार एवं राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी', डॉ राजेश कुमार व्यास सहित देश के प्रतिष्ठित साहित्यकार उपस्थित थे।। कार्यक्रम का संचालन सुकृता पाल कुमार ने किया।

अकादेमी सचिव राव ने बताया कि इससे पहले पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की। बीज वक्तव्य वरिष्ठ साहित्यकार डॉ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया तथा वरिष्ठ असमिया लेखक ध्रुव ज्योति वोरा समारोह के विशिष्ट अतिथि थे।

युवा सहिती में रचनाकारों ने बांधा समां

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी के वार्षिक साहित्योत्सव के चौथे दिन युवा लेखक सम्मिलन 'युवा सहिती : नई फसल' में युवा रचनाकारों ने अपनी प्रस्तुति से समां बांधा। चार सत्र में आयोजित सम्मिलन में हिंदी के घनश्याम देवांश, अंग्रेजी की नेहा बंसल, उर्दू के अभिषेक शुक्ल और पंजाबी के अली राजपुरा समेत 24 भाषाओं के नवोदित साहित्यकारों ने हिस्सा लिया।

चौथे दिन के कार्यक्रमों की शुरुआत 'आमने-सामने' सत्र से हुआ, जहां साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकों से प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने बातचीत की, वहीं छह दिवसीय उत्सव में बृहस्पतिवार को 'भारतीय साहित्य में गांधी' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी शुभारंभ हुआ। अंग्रेजी कवि जयंत महापात्र, इतिहासकार सुधीर चंद्रा और मॉरीशस के पूर्व शिक्षा मंत्री अरमूगम परसुरामन ने दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का शुभांरभ किया। इसके बाद '21वीं सदी में गांधी की प्रासंगिकता', 'गांधी और दलित आंदोलन' सरीखे विषयों पर वक्ताओं ने अपनी बात रखी। अरमूगम परसुरामन ने कहा कि गांधी से पूरी विश्व राजनीति प्रभावित रही है, वहीं आलोचक एवं कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गांधी के चिंतन का आरंभ बिंदु शोषितों के प्रति करुणा से शुरू होता है, जबकि इसी समय दूसरे महान विचारक कार्ल मार्क्स शोषकों के प्रति आक्रोश से भरे रहे। इस तरह हम गांधी जी की पूरी सोच में कोमलता और करुणा को पाते हैं। उन्होंने कहा कि गांधी का मॉडल सभ्यता के लिए अलग और विकास के लिए अलग था। आज 21वीं सदी में हम गांधी के विचारों के साथ ही अपनी सभ्यता को बचा पाएंगे। समारोह की आखिरी प्रस्तुति भूपेन हजारिका सेंटर फॉर स्टडीज इन परफार्मिंग आर्ट्स की ओर से 'गायन-बायन, माटी आखरा एवं राम विजय खंडन दृश्य' रही।

साहित्य अकादमी के वार्षिक साहित्योत्सव के चौथे दिन आयोजित युवा लेखन सम्मिलन के प्रतिभागी रचनाकारों के बारे में जानकारी देते अकादमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ●

महात्मा गांधी आज के दौर में भी प्रासंगिक

लेकिन जात-पात के मामले में वक्ताओं ने रखी मिली जुली राय

सेमिनार में हिस्सा लेने वाले बुद्धिजीवी। फोटो : नीरज कुमार

नई दिल्ली, 31 जनवरी(नवोदय टाइम्स):महात्मा गांधी और उनके विचार आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वह आजादी आंदोलन के दौरान हुआ करते थे। चाहें उनका सत्य और अहिंसा का रास्ता हो या फिर स्वराज की बात हो अथवा ग्राम विकास और पूर्ण रूप से निर्भरता के लिए प्रयास करने से लेकर देश का विकास ऊपर से नहीं बल्कि नीचे से होगा, तभी सही मायने में देश विकसित हो सकता है। सभी बातें विभिन्न वक्ताओं ने भारतीय साहित्य में गांधी विषय पर आयोजित संगोष्ठी में कही। संगोष्ठी का उद्घाटन अंग्रेजी कवि व लेखक जयंत महापात्र ने किया। मॉरीशस के पूर्व शिक्षा मंत्री एवं यूनेस्को के पूर्व निदेशक अरमूगम परसुरामन विशेषतौर पर उपस्थित थे। कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अवधेश कुमार सिंह, नंदकिशोर आचार्य, नीरा चंडोक, मिनी प्रसाद, गोपाल गुरु व नरेंद्र जाधव आदि वक्ताओं ने गांधी के विचार और उनके सत्याग्रह आदि आंदोलन की जमकर सराहना भी की।

कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गांधी के चिंतन का आरंभ बिंदु है शोषितों के प्रति करुणा, जबकि मार्क्सवाद में शोषकों के खिलाफ संघर्ष व हिंसा को तरजीह दी गई है। नंदकिशोर आचार्य ने गांधी के अर्थशास्त्र को नैतिक अर्थशास्त्र बताते हुए कहा कि आने वाले समय में ऐसे ही अर्थशास्त्र के सहारे विकास की कल्पना की जा सकती है। अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि आज भी गांधी के विचारों को अपने जीवन में समाहित कर 21 वीं सदी की बहुत सी मुश्किलों से निजात पा सकते हैं। नीरा चंदोक ने कहा कि भूमंडलीकृत विश्व में स्वराज के तहत सत्य और अहिंसा के द्वारा ही गांधी को सही मायने में समझा जा सकता है। जबकि मिनी प्रसाद ने गांधी की पारिस्थितिकी संबंधी अवधारणा विषय पर अपनी बात रखी। विभिन्न भाषाओं के लेखकों ने कविता प्रस्तुत की। उद्घाटन करते हुए मलयालम कवि के.सच्चिदानंदन ने कहा कि युवाओं को खुद से समाज से और प्रकृति से अवश्य संवाद करना चाहिए। परंपराओं में विश्वास करने तथा अपनी सोच को करुणा के और नजदीक ले जाने के लिए भी उन्होंने कहा। अकादमी के सचिव के.श्रीनिवासराव, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, टी.देवप्रिया, निर्मकांति, गौरहरि दास, पंकज राय व इतिहासकार एवं लेखक सुधीर चंद्रा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

गांधीजी के विचारों से बचा पाएंगे सभ्यता: विश्वनाथ

नई दिल्ली, लोकसत्य

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आकर्षण 'भारतीय साहित्य में गांधी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी रहा। संगोष्ठी का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ अंग्रेज़ी कवि एवं लेखक जयंत महापात्र ने किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मॉरीशस सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा यूनेस्को के पूर्व निदेशक अरमूगम परसुरामन उपस्थित रहे। संगोष्ठी का बीज भाषण प्रख्यात इतिहासकार एवं लेखक सुधीर चंद्रा ने दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा तथा समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक द्वारा किया गया। अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने किया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आलोचक एवं कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गांधी के चिंतन का आरंभ बिंदु शोषितों के प्रति करुणा से शुरू होता है जबकि इसी समय दूसरे महान विचारक काल मार्क्स शोषकों के प्रति आक्रोश से भरे रहे। इस तरह हम गाँधी जी पूरी सोच में कोमलता और करुणा को पाते हैं। आगे उन्होंने कहा कि गाधी जी का मॉडल सभ्यता के लिए अलग और विकास के लिए अलग था। उनके इस मॉडल में

- सभ्यता व विकास दोनों के लिये अलग-अलग था गांधी का मॉडल
- 'भारतीय साहित्य में गांधी का शुभारंभ' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्थानीय परिवेश की भागेदारी सर्वप्रथम थी। आज 21वीं सदी में हम गांधी जी के विचारों के साथ ही अपनी सभ्यता को बचा पाएँगे। इसी सत्र में नंदकिशोर आचार्य ने गाँधी के अर्थशास्त्र को नैतिक अर्थशास्त्र बताते हुए कहा कि आनेवाले समय में ऐसे ही अर्थशास्त्र के सहारे विकास की कल्पना की जा सकती है।

जयंत महापात्र ने कहा कि मैं महात्मा गाँधी के बारे में बोलते हुए अपने को बहुत छोटा पाता हूँ। मैंने उन पर एक लंबी कविता 1970 में लिखी थी जिसमें मैंने उनके पूरे व्यक्तित्व पर एक लंबी टिप्पणी की थी। विशिष्ट अतिथि अरमूगम परसुरामन ने कहा कि गांधी से पूरी विश्व राजनीति प्रभावित रही है और मैं स्वीकार करता हूं मेरे राजनीति जीवन पर भी उनका असर है। गांधी ने कई बार मुझे रास्ता दिखाया है।

'जो कलाएं हमें बृहत्तर नहीं बनाती वे व्यर्थ हैं'

नई दिल्ली, 1 फरवरी (नवोदय टाइम्स) : नाटक अपने में कई विधाओं को समेटे हुए है और उसका लेखन दलगत राजनीति से ऊपर उठकर होना चाहिए अन्यथा वह स्थायी नहीं रहेगा और जल्द ही परिदृश्य से गायब हो जाएगा। दरअसल जो भी कलाएं हमें बृहत्तर नहीं बनाती वे व्यर्थ हैं। यह बात प्रख्यात रंग व्यक्तित्व रामगोपाल बजाज ने शुक्रवार को रबींद्र भवन सभागार में चल रहे साहित्योत्सव के 5वें दिन आयोजित परिचर्चा 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' में कही। उन्होंने नाटक को सरकारी नीतियों में शामिल करने के लिए आह्वान करते हुए कहा कि हम अपनी श्रेष्ठ नाट्य परम्परा तभी बचा पाएंगे। जब इन्हें भी सरकारी नीतियों में जगह मिलेगी। परिचर्चा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने कहा कि नाटककार हमेशा वर्तमान को लेकर बातचीत करता है लेकिन उसमें अतीत या भविष्य के ऐसे संकेत जरूर होते हैं जिन्हें कोई भी निर्देशक पकड़ सकता है। उन्होंने कहा कि नाट्य निर्देशकों को भी साहित्य को एक शास्त्र के रूप में पढ़ना और समझना होगा तभी वे उसके रूपांतरण और निर्देशन करते समय उसके साथ न्याय कर पाएंगे। अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने युवा निर्देशकों द्वारा उपन्यास या कहानी का निर्देशन स्वयं करने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बहुत गलत प्रक्रिया है और इसे रोका जाना चाहिए।

जो कलाएं हमें बृहत्तर नहीं बनाती वे व्यर्थ हैं : रामगोपाल बजाज

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का पाँचवाँ दिन था। आज दो महत्त्वपूर्ण विषयों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। पहली परिचर्चा थी 'मीडिया और साहित्य' पर जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखिका एवं पत्रकार वासंती ने की और ए. कृष्णाराव, अनंत विजय, अवनिजेश अवस्थी, मधुसूदन आनंद, रवींद्र त्रिपाठी एवं सजंय कुंदन ने अपने विचार व्यक्त किए।

परिचर्चा के पहले वक्ता रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि अगर मैं लेखक या पत्रकार में से यह चुनाव करूँ कि किसको अभिव्यक्ति की ज्यादा स्वतंत्रता है तो मेरा उत्तर लेखक होगा। क्योंकि पत्रकारों को विभिन्न अंकुशों के बीच काम करना होता है। आगे उन्होंने कहा कि प्रिंट पत्रकारिता में जरूर साहित्य का स्थान कम हुआ है लेकिन उसके स्थान पर सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हम साहित्य को विभिन्न रूपों में देख सकते है। वरिष्ठ पत्रकार मधुसूदन आनंद ने कहा कि हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का जो शुरुआती इतिहास है उसमें पत्रकारिता और साहित्य के बीच कोई अलगाव नहीं था। अच्छे लेखक ही पत्रकार थे या कहे अच्छे पत्रकार ही लेखक थे। लेकिन उन्होंने आगे यह प्रश्न भी उठाया कि क्या हमारे पास साहित्य के पाठक है। अगर साहित्य के पाठक होते तो मीडिया पर उसको प्रकाशित/प्रसारित करने का दवाब जरूरी होता। उन्होंने इस दूरी को पाटने के लिए पुस्तक संस्कृति की जरूरत पर बल दिया। अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि मीडिया बाजार के दवाब में है और उसे साहित्य और संस्कृति विषयों में बहुत ज्यादा रुचि नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि एक समय साहित्य समाज के आगे चलता था लेकिन अब वह उसके पीछे चल रहा है। यह परिस्थितियाँ बदलनी होगी तभी साहित्य मशाल का काम कर पाएगा और उसे तभी अन्य माध्यमों में अपेक्षित स्थान मिल पाएगा। अनंत विजय ने आज के साहित्य पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि आजकल जो कहानी और लिखी जा रही है क्या वो सच में साहित्य के दायरे में आती है। उन्होंने कहा कि जब घटिया साहित्य लिखा जाएगा तो उसे छापेगा कौन ? उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अब छपने के लिए ही नहीं बल्कि सिनेमा और टेलीविजन के द्वारा भी लिखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमें यह विलाप बंद करके कि साहित्य छापा नहीं जा रहा के स्थान पर अच्छा लेखन कर उसे प्रकाशन के लिए विवश करना होगा। अंतिम वक्ता सजय कुंदन ने कहा कि आजकल हर अखबार ब्रांडिंग के दवाब में या कहे बाजार के दवाब में

'अपना 'कंटेंट' चुन रहा है और वह यह भी जान रहा है कि साहित्य में भी ब्रांडिंग बनने का माद्दा है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता बाजार के साथ हो सकती है लेकिन साहित्य बाजार का हमेशा विरोध करेगा। सत्र की अध्यक्षता कर रही वासंती ने कहा कि मीडिया और साहित्य का रिश्ता एक दूसरे के लिए पूरक का काम कर सकता है अतः हमें दोनों के बीच कुछ जरूरी और समाज को संदेश देने वाले तथ्यों में एकरूपता लानी होगी।

आज की दूसरी परिचर्चा 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' पर केंद्रित थी जिसका उद्घाटन वक्तव्य रामगोपाल बजाज ने दिया और कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण थे। कार्यक्रम का अध्यक्षीय वक्तव्य चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

मीडिया और साहित्य पर परिचर्चा

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की ओर आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के पांचवें दिन दो महत्तवपूर्ण विषयों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। पहली परिचर्चा थी 'मीडिया और साहित्य' पर जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिल लेखिका वासंती ने की और ए. कृष्णाराव, अनंत विजय, अवनिजेश अवस्थी, मधुसूदन आनंद, रवींद्र त्रिपाठी एवं संजय कुंदन ने अपने विचार व्यक्त किए। परिचर्चा के पहले वक्ता रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि अगर मैं लेखक या पत्रकार में से यह चुनाव करूं कि किसको अभिव्यक्ति की ज्यादा स्वतंत्रता है तो मेरा उत्तर लेखक होगा। क्योंकि पत्रकारों को विभिन्न अंकुशों के बीच काम करना होता है। प्रिंट पत्रकारिता में जरूर साहित्य का स्थान कम हुआ है लेकिन उसके स्थान पर सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हम साहित्य को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। वरिष्ठ पत्रकार मधुसूदन आनंद ने कहा कि हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का जो शुरुआती इतिहास है उसमें पत्रकारिता और साहित्य के बीच कोई अलगाव नहीं था। अच्छे लेखक ही पत्रकार थे या कहे अच्छे पत्रकार ही लेखक थे। लेकिन उन्होंने आगे यह प्रश्न भी उठाया कि क्या हमारे पास साहित्य के पाठक हैं। अगर साहित्य के पाठक होते तो मीडिया पर उसको प्रकाशित/प्रसारित करने का दवाब जरूरी होता। उन्होंने इस दूरी को पाटने के लिए पुस्तक संस्कृति की जरूरत पर बल दिया। अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि मीडिया बाजार के दवाब में है और उसे साहित्य और संस्कृति विषयों में बहुत ज्यादा रुचि नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि एक समय साहित्य समाज के आगे चलता था लेकिन अब वह उसके पीछे चल रहा है। यह परिस्थितियां बदलनी होगी तभी साहित्य मशाल का काम कर पाएगा और उसे तभी अन्य माध्यमों में अपेक्षित स्थान मिल पाएगा। अनंत विजय ने आज के साहित्य पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि आजकल जो कहानी और लिखी जा रही है क्या वो सच में साहित्य के दायरे में आती हैं। उन्होंने कहा कि जब घटिया साहित्य लिखा जाएगा तो उसे छापेगा कौन ? उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अब छपने के लिए ही नहीं बल्कि सिनेमा और टेलीविजन के द्वारा भी लिखा जा सकता है। हमें यह विलाप बंद करके कि साहित्य छापा नहीं जा रहा के स्थान पर अच्छा लेखन कर उसे प्रकाशन के लिए विवश करना होगा। अंतिम वक्ता संजय कुंदन ने कहा कि आजकल हर अखबार ब्राडिंग के दवाब में या कहे बाजार के दवाब में अपना 'कंटेंट' चुन रहा है और वह यह भी जान रहा है कि साहित्य में भी ब्राडिंग बनने का माद्दा है। पत्रकारिता बाजार के साथ हो सकती है लेकिन साहित्य बाजार का हमेशा विरोध करेगा। सत्र की अध्यक्षता कर रही वासंती ने कहा कि मीडिया और साहित्य का रिश्ता एक दूसरे के लिए पूरक का काम कर सकता है अतः हमें दोनों के बीच कुछ जरूरी और समाज को संदेश देने वाले तथ्यों में एकरुपता लानी होगी।

ساہتیہ اکادمی کے زیر اہتمام سالانہ ادبی پروگرام 'ساہتیہ اُتسو' آج سے

6 روزہ پروگرام میں 24 زبانوں کے تقریباً 250 ادیبوں کی شرکت متوقع

نئی دہلی (ایس این بی)

ساہتیہ اکادمی کے زیر اہتمام سالانہ پروقار ادبی پروگرام 'ساہتیہ اتسو 2019' کا انعقاد اکادمی کمپلیکس میں آج پیر سے کیا جارہا ہے۔ صبح دس بجے اکادمی کی سال بھر کی کارکردگیوں پر مشتمل نمائش کا افتتاح معروف ادیب، ماہر تعلیم، راجیہ سبھا کے سابق رکن پدم بھوشن مرنال میری کریں گے۔ یہ نمائش 2 فروری تک جاری رہے گی۔ اس نمائش میں اکادمی کے ذریعہ گزشتہ سال میں منعقدہ پروگراموں کو تصویروں کے ذریعہ دکھایا گیا ہے۔

اطلاع کے مطابق دوپہر 2 بجے ساہتیہ اکادمی بھاشا سمان تقریب کا انعقاد عمل میں آئے گا جس میں 8 ممتاز ادیبوں کو ایوارڈ تقسیم کیا جائے گا۔ اکادمی ہر سال کلاسیکی اور قرون وسطیٰ ادب میں نمایاں خدمات کے لیے یہ انعام دیتی ہے۔ اس سال شمالی، مشرقی، مغربی علاقوں کے لیے اور کوشلی سنبل پوری، پائیتے اور ہریانوی ادب کے اپنے اپنے میدان میں گراں قدر ادبی خدمات کے لیے اکادمی کے صدر چندر شیکھر کمبار انعامات پیش کریں گے۔

امسال پہلی بار ساہتیہ اتسو کے دوران دوروزہ قبائلی ادیبہ کانفرنس کا انعقاد عمل میں آئے گا جس کا افتتاح ممتاز ہندی ادیبہ رمنیکا گپتا کریں گی۔ معروف بنگلہ ادیبہ انیتا اگنی ہوتری مہمانِ خصوصی ہوں گی۔ صدر، ساہتیہ اکادمی چندر شیکھر کمبار صدارت کریں گے اور اکادمی کے نائب صدر مادھو کوشک اختتامی خطبہ دیں گے۔ اس دوروزہ پروگرام میں 36 قبائلی زبانوں کی 43 ادیبہ شرکت کریں گی۔

دوپہر بعد 3.30 بجے سے اس پروگرام کا انعقاد عمل میں آئے گا۔ شام 6 بجے کلچرل پروگرام میں بیگا ڈانس کی پیشکش ہوگی۔ اسے گوپی کرشن سونی کے بیگا یووا نرتیہ دل، پنڈریا، چھتیس گڑھ کے فنکاروں کے ذریعہ پیش کیا جائے گا۔ پورے ساہتیہ اتسو کے دوران رویندر بھون کمپلیکس میں اکادمی کی کتابوں کی نمائش صبح 10 بجے سے شام 7 بجے تک کی جائے گی جس میں اکادمی کی کتابوں پر 10 فیصد کی خصوصی رعایت دی جائے گی۔

Email: hamarasamaj@gmail.com
Daily HAMARA SAMAJ Delhi
روزنامہ ہمارا سماج دہلی
Friday,25 January 2019
NATIONAL & LOCAL NEWS

ساہتیہ فیسٹول میں اس سال چھائے رہیں گے مہاتما گاندھی

28 جنوری تا 2 فروری 2019 کی ساہتیہ اکادمی تقریبات میں صنف ثالث کو بھی اہمیت، ایوارڈ تقسیم کی اہم تقریب کمانی آڈیٹوریم میں ہوگی

ساہتیہ اکادمی سکریٹری کے سرینواس راؤ

''6 دنوں کی تقریبات میں مختلف ادبی وثقافتی پروگرام ہوں گے، ملک بھر سے 250 سے زائد ادبا، ناقدین اور مصنفین مدعو ہیں، مہاتما گاندھی کی خصوصی نمائش اور سیمینار نیز پہلی بار ساہتیہ اکادمی میں صنف ثالث کو خصوصی جگہ دی گئی ہے''

عامر سلیم خان

نئی دہلی 24 رجنوری، سماج نیوز سروس: ساہتیہ اکادمی کا سال 2019 کا سالانہ 6 روزہ فیسٹول کئی نوعیتوں سے اہم رہے گا۔ بابائے قوم مہاتما گاندھی کی 150 ویں سالگرہ کی نسبت سے اس بار ان پر ایسی 700 کتابوں کی نئی دہلی کے ساہتیہ اکادمی کے رابندر بھون میں نمائش لگائی جائیگی جو یا تو آنجہانی گاندھی نے خود لکھی ہیں یا دیگر ادیبوں اور رائٹرز نے ان پر تحریر کی ہیں۔ ایک اور خاص بات یہ ہے کہ اس بار فیسٹول میں انسانی پہلوؤں کے مدنظر 'صنف ثالث' کو بھی جگہ دی جارہی ہے۔ 2 فروری کو دوپہر کی شفٹ میں، صنف ثالث کوی سمیلن کے ساتھ ان پر کئی دیگر چیزیں تقریبات کا حصہ ہوں گی۔ ساہتیہ اکادمی کی اہم تقریب 'تقسیم ایوارڈ' کا پروگرام نئی دہلی کے کمانی آڈیٹوریم میں 29 جنوری کو شام 5:30 بجے شروع ہوگا جس میں دیش کی 24 زبانوں کے ادیبوں کو ایوارڈ تقسیم کئے جائیں گے۔ اردو کا ایوارڈ رحمٰن عباس کیلئے اعلان ہوا ہے جبکہ انگریزی اور کشمیری میں بھی مسلم اقلیت کے ادباء نے جگہ بنائی ہے۔

ساہتیہ اکادمی کے سکریٹری مسٹر کے سرینواس راؤ نے آج پریس کانفرنس میں بتایا کہ اس فیسٹول میں 6 دنوں تک پروگراموں میں مختلف ادبی وثقافتی پروگرام ہوں گے۔ اس میں ملک بھر سے 250 سے زائد ادبا، ناقدین اور مصنفین مدعو ہیں۔ فیسٹول کو گذشتہ کچھ برسوں سے غیر ملکی ادیبوں سے بھی جوڑا گیا ہے۔ انہوں نے بتایا اس بار ماریشش اور سری لنکا سے ادیبوں کی شرکت ہوگی۔ مہاتما گاندھی کی 150 ویں سالگرہ کے موقع سے 31 جنوری سے 'بھارتیہ ساہتیہ میں گاندھی' عنوان سے سہ روزہ قومی سیمینار کا انعقاد ہوگا جس میں گاندھی سے متعلقین کئی عناوین پر مقالے پڑھے جائینگے۔ مسٹر کے سرینواس راؤ نے بتایا کہ ساہتیہ اکادمی کی تاریخ میں پہلی بار صنف ثالث کو بھی جگہ دی جارہی ہے۔ ایک کوی سمیلن ہوگا جس میں درجن بھر سے زائد تیسری صنف کے کوی حضرات پڑھیں گے۔ انہوں نے کہا کہ ساہتیہ اکادمی نے تیسری صنف کو اہمیت دینے کا فیصلہ انسانی بنیادوں اور قانونی حقوق کے پیش نظر سے کیا ہے۔ مسٹر راؤ نے بتایا کہ 28 جنوری کو صبح 10 بجے سے اکادمی کی تقریبات کا رابندر بھون میں آغاز ہوجائے گا۔ نامور مصنف اور سابق ممبر پارلیمنٹ مرنال مری کے مبارک ہاتھوں سے تقریبات کا آغاز ہوگا۔ انہوں نے بتایا کہ مختلف بولیوں اور زبانوں کی نمائش بھی چلتی رہے گی۔ فیسٹول ایک طرح سے ادبی نمائش ہوگی اور ہم نے اب تک جو کچھ کیا ہے اس کا ایک نظری خاکہ لوگوں کے سامنے آجائے گا۔ میڈیا اور لٹریچر کے ایشو پر کہا کہ ہم نے میڈیا کو ادب سے بھی جوڑتے ہوئے پروگرام رکھا ہے کہ ادب اور میڈیا میں کیا چیزیں ہیں جو مشترک ہیں۔ انہوں نے کہا کہ موجودہ دور میں سوشل میڈیا کے بڑھتے اثر ورسوخ کے باوجود کتابوں کے شائقین کس طرح برقرار رہیں گے اور پبلشر نیز بھارتی لٹریچر کی زندگی کس طرح پروان چڑھے گی اس پر بھی باتیں ہوں گی۔

روزنامہ سیاسی تقدیر دہلی
DAILY SIYASI TAQDEER DELHI
Friday 25 January 2019

28 جنوری تا 02 فروری ہوگا ساہتیہ فیسٹول

ملکی وغیر ملکی قلم کاروں وادیبوں کے علاوہ گزشتہ سال کے بہادر بچے بھی ہونگے شامل

عبد الرشید

نئی دہلی ، 24 جنوری (ایس ٹی بیورو) وزارت برآئے ثقافت حکومت ہند کے تحت آنے والی ساہتیہ آکادمی نئی دہلی کی جانب سے 28 جنوری تا 02 فروری ساہتیہ فیسٹول کا اہتمام کیا جارہا ہے۔ ساہتیہ اکادمی کے سیکریٹری کے شرینواسن راو نے ایک پریس کانفرنس کر جانکاری دیتے ہوئے کہا کہ ہر سال کی طرح اس سال بھی ہم بہت ہی کامیابی کے ساتھ اس فیسٹول کا اہتمام کررہے ہیں ۔انہوں نے کہا کہ 28 جنوری کو سابق ممبر آف پارلیمینٹ پروفیسر مرنال میر کے ہاتھوں فیسٹول کا افتتاح کیا جائے گا۔ اس موقع پر اکادمی کی جانب سے گزشتہ سال 2018 میں شائع ہونے والی تمام کتابوں کی نمائش کا بھی افتتاح کرینگے ۔انہو ں نے کہا کہ بابائے قوم مہاتما گاندھی کے ایک سو پچاسوی سال گرہ کے موقع پر انکے کارناموں کو یاد کرنے کے لئے نمائش میں ایک جگہ مخصوص کی گئی ہے جس میں انکی زندگی پر لکھی قریب 700 کتا بیں رکھی جائے گی ۔اسکے علاوہ الگ الگ زبانوں میں نمایاں کارکردگی کرنے والے قلم کاروں اورادیبو ں کو ساہتیہ اکادمی کی جانب سے ایواڑ سے بھی نوزا جائے گا۔ انہوں نے کہا کہ اس بار آٹھ 8 لوگوں کو ساہتیہ ایواڑ سے نوازا جارہا ہے جو کہ دنیاں کے نام ور قلم کار اور ادیب ہیں۔ اسکے علاوہ اس فیسٹول میں پہلی بار دوروزہ آدیواسی خواتین قلم کاروں کا بھی ایک سیمینار منعقد ہوگا جس میں مختلف قسم کی 36 آدیواسی زبانوں کی 43 آدیواسی خواتین قلم کار حصہ لینگی ۔اسکے علاوہ کے شرینواسن راو نے کہا کہ اس بار گاندھی جی کی زندگی کے مختلف پہلو پر بھی ایک سیمنار ہوگا جس میں انکی زندگی سے وابسطہ کامو ں پر مقالات پڑھے جائینگے۔